उसका खण्डन क़ुरआन से ही होता है; क्योंकि हर एक *सूरत के ऊपर लिखा है कि यह सूरत मक्के में उतरी, यह मदीने में उतरी और यह अन्य अमुक २ स्थान पर उतरी। ऐसी अवस्था में उनका एक ही स्थान पर और एक ही बार उतरना कैसे मान सकते हैं? यदि यह मान लें कि क़ुरआन पृथक् २ आयतों में जैसा कि हमारे मुसलमान भाई मानते हैं उतरा तो उसका खण्डन भी क़ुरआन की आयतों से होता है।

देखो क़ुरआन सिपारा २५।

वल् किताबिल् मबीने इन्ना अन्ज़ल् नाहो फ़ी लैलतिम् मुबारकतिन् इन्ना कुन्ना मुन्ज़ेरीन्॥

अर्थ—शपथ (क़सम) है किताब बयान करने वाले की निश्चय उतारा हमने उसको (क़ुरान को) बीच रात बरकत वाली के निश्चय हम हैं डराने वाले।

पाठकगण! जब कि ख़ुदा क़सम खाकर इस बात को प्रकाशित करता है कि जब उसने क़ुरान को "बरकत वाली" रात में उतारा, तो इसके विरुद्ध समझना खुल्लम खुल्ला ख़ुदा को भी असत्यवादी कहना है। ख़ुदा की बात को क़सम खाने पर भी विश्वास के योग्य न समझना है। हम द्विविधा में हैं कि

*यह शब्द संस्कृत के "सूत्र" शब्द से बनाया है।

इन दो परस्पर विरुद्ध बातों में से, कि ख़ुदा ने क़ुरान को एक साथही उतारा वा पृथक२ उतारा, किसको सत्य मानें ? जबकि इस बात पर ध्यान आता है कि क़ुरान की प्रत्येक सूरत पर जो कुछ लिखा है वह सत्य है तो तत्काल ही विचार उत्पन्न होता है कि जिस बात को ख़ुदा क़सम खाकर बताता है वह कैसे झूंठ हो सकता है ? दूसरे, यह भी सन्देह उत्पन्न होता है कि क़ुरान की सूरतों के ऊपर जो कुछ लिखा है, वह ख़ुदा का वाक्य है वा क़ुरान के संग्रह करने वाले का है ? यदि यह मानें की मक्के और मदीने में उतरना भी ख़ुदा की ओर से है, उस समय किसी बात को भी ठीक मानना कठिन प्रतीत होता है। यदि यह माना जावे कि, यह आयत मक्के में उतरी, यह क़ुरान के इकट्ठा करने वाले ने लिखा है तो क़ुरान में मिलावट होने का सन्देह होता है। प्रत्येक दशा में क़ुरान का इलहाम होना ऐसा ही असम्भव है जैसे की अन्धेरी रात को दिन सिद्ध करना। इस के अतिरिक्त, क़ुरान के एक रात में उतरने के और बहुत से प्रमाण हैं।

देखो क़ुरान सिपारः ३० सूरतुल क़दर

इन्ना अन्ज़ल्नाहो फी लैलातिल्‌ कद्‌र ।

अर्थ—निश्चय उतारा मैंने क़ुरान को बीच रात क़द्र के ।

आयत २ लैलतुलक़द्र ख़ैरूमिन अलफ़े शहर। अर्थात रात की क़द्र बेहतर है हज़ार मास से।

आयत ३-तनज़्ज़लुल मलायकतो वर्रूहो फ़ीहा बे इज़्ने रब्बाहिम् मिन् कुल्ले अमरिन् सलामुन् हेय हत्ता मतलइल् फ़ज़र।

अर्थात्—उतरते हैं फ़रिश्ते और अरवाह पाक (पवित्रात्माएं) है उसके साथ हुक्म परवरदिगार अपने के वास्ते हर काम के। इसी प्रकार के और बहुत से प्रमाण मिलते हैं, जिनसे विदित होता है कि क़ुरान का ईश्वरीय वाक्य होना तो दूर रहा, किन्तु यह किसी विद्वान का भी वाक्य नहीं हो सकता, क़ुरान की आयतों में विरोध के कारण और कतिपय बुद्धि विरुद्ध बातों के कारण और ईश्वर की निन्दा करने से, जिसकी स्तुति और प्रार्थना के लिये, मुसलमानों के कथनानुसार, उतरा है स्पष्ट ज्ञात होता है कि क़ुरान बनाने वाला कोई अरब का रहनेवाला है और अपनी भाषा सुन्दरता से बोलने वाला है। क़ुरान में भाषा सौन्दर्य के अतिरिक्त और कोई विद्या की बात नहीं है कि जो उसके उतरने से पहिले विद्यमान न हो क़ुरान के कर्त्ता ने दावा भी उसी बात का किया है कि यदि तुम सच्चे हो तो ऐसी एक सूरत बना लाओ। उस दावे से तो यह सिद्ध होता है कि उस

समय में मुहम्मद साहब बड़ी सुन्दर भाषा में बोलने वाले थे। हमारे मुसलमान दोस्तों ने हज़रत मुहम्मद साहबको, जो हमारे विचार में क़ुरान के कर्त्ता हैं उम्मी (बेपढ़ा) सिद्ध किया है। परन्तु उनके इस कथन से क़ुरान को ईश्वरीय वाक्य नहीं कहा जा सकता। क्योंकि हज़रत अरबी भाषा से भले प्रकार परिचित थे। जिस प्रकार आज कल के देहली और लखनऊ के मूर्ख निवासी भी सुन्दर भाषा बोल सकते हैं। इस बात में और शहरों के साधारण पढ़े लिखे भी उन की बराबरी नहीं कर सकते। फिर मुहम्मद साहब जो अरब के सब से बड़े शहर मक्का में पैदा हुवे थे जिनके माँ बाप बड़े मक्के के मन्दिर के पुजारी थे, और जिनको हर समय ऐसे मनुष्यों से बोलने का काम पड़ता था जो वहां प्रतिष्ठित से प्रतिष्ठित गिने जाते थे। ऐसी अवस्था में सुन्दर भाषा का बोलना कोई मौजज़ः (चमत्कार) नहीं हो सकता। जिन मनुष्यों ने पञ्जाब की एक कहानी-हीरा और रांझा का क़िस्सा, जिसको वारिस शाह ने बनाया है, पढ़ा है वे बतलाते हैं कि पञ्जाबी भाषा की उत्कृष्टता की यह पराकाष्ठा है। परन्तु इससे उसका इलहामी (ईश्वरीयवाक्य) होना सिद्ध नहीं होता, जब तक कि उसका विषय ऐसा न हो कि जिन के विद्या सम्बन्धी

विचार ईश्वर वाक्य कहाने के अधिकारी हों। हमारे बहुत से मित्र कहदेंगे कि बारिसशाह ने केवल एक ही अंश वर्णन किया है किन्तु क़ुरान में बहुत सी बातें ईश्वर का वाक्य कहाने योग्य हैं, जैसे मूर्ति पूजा निषेद और "एकमेवा द्वितीयं ब्रह्म" का उपदेश। परन्तु ऐसे दोस्तों का कथन किसी प्रकार ठीक नहीं हो सकता। प्रथम तो क़ुरान में बहुत सा भाग पुराने क़िस्सों से भरा है जिसको मुहम्मद साहब ने अपनी यात्रा में, जबकि वह नौकरी की अवस्था में शाम आदि ईसाई देशों में जाया करते थे सुना था। इस भाग को तो इसलाम से कोई सम्बन्ध ही नहीं होना चाहिये। दूसरे हिस्से में ऐसी आज्ञायें हैं जिनका सम्बन्ध केवल मुहम्मद से है अर्थात् उनके ही लाभ की बातें हैं। जैसे जब मुहम्मद साहब की सब से अधिक प्रिया स्त्री आयशा पर व्यभिचार का दोष लगाया गया और उससे मुहम्मद साहब को अत्यन्त दुख पहुंचा। तब आयशा को कलंक से बचाने के लिये यह आयत मुसलमानों के कथनानुसार, उतरी।

जिसकी चर्चा क़ुरान की मञ्ज़िल ४ सिपारह १८ सूरतुल नऊर में आई है। इस वृत्तान्त को शाह अब्दुल

नोट—क़दर की रात में फ़रिश्तों का उतरना बतलाने से यह स्पष्ट है कि और रात में फ़रिश्ते नहीं उतरते।

क़ादर ने हाशिये पर लिखा है। देखो छापाख़ाना नवलकिशोर लखनऊ सटीक क़ुरान पृष्ठ ४५२ का हाशिया नं० २। इसके उपरान्त तूफ़ान (जल विप्लव) का वर्णन है जो हज़रत के समय में उठा था। हज़रत आयशा पर यह कलंक लगाया गया था। पैग़म्बर एक दिन जहाद से लौटे आरहे थे। रात को कूंच हुआ, नफीरी और नगाड़ा साथ न था। मुसलमानों की माता (आयशा) शौच को गई थीं। संयोगवश पीछे रह गईं। एक मुसलमान लश्कर से पीछे चलता था जिसने उनको ऊंट पर सवार करा लिया। स्वयं ऊंट की नकेल पकड़ कर चलता था और लश्कर में आयशा को पहुंचादिया। काफ़िरों में एक मास तक इसका चर्चा रहा। पैग़म्बर भी सुनते रहे। बिना अनुसन्धान किये कुछ नहीं कहते थे परन्तु दिल में कुढ़ रहते थे। एक मास के उपरान्त जब मुसलमानों की माँ (आयशा) ने सुना, उन्होंने बहुत ही दुःख माना। रोते २ दम न लिया। अल्ला ताला ने फिर ये अगली आयतें भेजीं।

इसी प्रकार, मुहम्मद साहब ने अपने लेपालक बेटे ज़ैद की स्त्री ज़ैनब को ज़ैद के तलाक़ देने पर ले लिया। जब लोगों ने उनको बुरा कहना आरम्भ किया, तब बहुत सी आयतें उतारलीं जिससे प्रत्येक के लिये

में यह विचार उत्पन्न होता है कि कुरान शरीफ भी मुहम्मद साहब की ही आज्ञायें हैं जो उन्होंने आवश्यकतानुसार मनुष्यों पर प्रकट कीं भला ऐसी बातों को, मूर्खों के अतिरिक्त कौन सत्य मान सकता है? इसके अतिरिक्त, इस बात की भी यहां आवश्यकता है कि यह बात भी जानी जावे कि ईश्वर वाक्य के लिये कौन से गुणों की आवश्यकता है? जिससे प्रत्येक मनुष्य उसकी परीक्षा कर सके क्योंकि बिना लक्षण के किसी प्रकार भी यह बात नहीं ज्ञात हो सकती कि यह किताब ईश्वरीय है वा किसी मनुष्य की घड़न्त है। इसलिये सबसे पूर्व इलहाम में ये गुण होने आवश्यकीय हैं कि उसके आशय वा अर्थों से ईश्वर की निन्दा न होती हो। दूसरी यह कि वह किताब अपने उतरने की आवश्यकता को बतासके। तीसरे यह कि सृष्टि के प्रारम्भ में हो। चौथे वह किसी देश की भाषा में न हो। पांचवे उसमें किस्से कहानी और घरेलू झगड़े जो किसी मनुष्य से सम्बन्ध रखते हों, न हों छटे उस में कोई बात सृष्टि नियम और बुद्धि के विरुद्ध न हो। सातवें उसके विषयों में, जो उसमें वर्णन किये हों, परस्पर विरुद्ध बातें, अकारण पुनरुक्ति दोष और सत्यता से विरोध न पाया जावे कमसे कम इनसातबातों का इलहाममें होनाजरूरीहै

क्योंकि इलहामी किताबोंमें ईश्वर की मुहर तो लगी होती ही नहीं जिससे विदित हो जावे कि सचमुच इलहामी है। हमारे बहुत से मुसलमान मित्र कहेंगे कि ये लक्षण आपने इलहाम के कहांसे किये? तो उसका उत्तर यह है कि ईश्वरीय नियम से इलहाम के लिये ऐसे ही लक्षणोंकी आवश्यकता है, क्योंकि ईश्वर के ज्ञान से, मनुष्य उसके गुणों को जानकर उसकी उपासना करसकता है। यदि ईश्वर की किताब में ही ईश्वर की निन्दा हो तो मनुष्य किसप्रकार ईश्वरके गुणों को जानकर उसकी उपासना करेगा? दूसरे जबकि बिना आवश्यकता के कोई बुद्धिमानभी कोई काम नहीं करता, फिर ईश्वर, जो सर्वज्ञ है, बिना आवश्यकता के कोई काम क्यों करने लगा है तीसरे यदि इलहामका होना सृष्टि के आदि में नमाना जावे तो इलहाम की आवश्यकता से इनकार करना पड़ेगा।

या ईश्वरपर अन्याय और अज्ञानताका दोषलगेगा; जैसेकि प्रायः मनुष्य कहते हैं कि क्या कारण है कि ईश्वरने आदमसे लेकर मूसा तक मनुष्य के कल्याणार्थ कोई पुस्तक नहीं भेजी? यदि कहो कि कोई किताब थी तो उसको प्रस्तुत करना चाहिये अगर न थी तो दोष वैसा का वैसा ही है। उस किताबमें क्या कमी थी जिस

को पूरा करनेको तौरेत उतरी और तौरेत से पूर्व संसारमें कौनसा वैज्ञानिक सिद्धान्त नहीं था, जिसको तौरेतने पेश लाया? और तौरेतके समयसे पूर्व संसारमें कौनसी सत्य शिक्षा न थी जिसको ज़बूरने पूरा किया। और ज़बूरमें कौन सी कमी रह गई थी जिसको इञ्जील ने पूरा किया। और तौरेत ज़बूर और इञ्जील में क्या दोष था जो उनको मनसूख़ किया गया। प्रायः लोग कह देते हैं कि इञ्जील आदि पुस्तकों में लोगों ने घटा बढ़ा दिया है, परन्तु उनका यह कथन नितान्त अयुक्त है। मुसलमानों को उचित है कि इञ्जील की वह पुस्तक जिसमें यह घटना बढ़ना विद्यमान है, उपस्थितकरें और उन बढ़ाई हुई आयतोंको प्रकट करदें जबतक ऐसी पुस्तक का पता न लगजावे तबतक यह दावा निर्मूल है। अगर कोई कहेकि कुरानमें भी यह दोष है तो मुसलमान लोग इसका प्रमाण मांगेंगे परन्तु इञ्जील में न्यूनाधिकता का प्रमाण देने के लिये आप तैयार नहीं हैं। यह किस प्रकार सम्भव है कि ईश्वरकी किताबमें कोई मनुष्य कुछ मिलादे और उसका पता न मिलसके। आज तक ईश्वरीय वस्तुओं के साथ मानुषी वस्तुएं मिल नहीं सकतीं। इसलिये इलहाम वही है जो सृष्टिके आरम्भ में होकर मनुष्यों को सन्मार्ग दिखातारहे। चौथी युक्ति,

कि वह किसी देशकी भाषामें नहो, इसलिये है कि ईश्वर पर अन्यायका दोष नलगे क्योंकि जिस देशकी भाषा में होगा, वहां के मनुष्य उसको सरलता से पढ़ सकेंगे। दूसरे देशवासियों को अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रायः मौलवी लोग यह भी कहते हैं कि यदि किसी देश की भाषा में न हो तो लोग उसको कैसे पढ़ सकेंगे? उसका उत्तर यह है कि प्रथम तो सृष्टि के आरम्भ में बहुत से देश भाषाओं का विभाग हो ही नहीं सकता, ईश्वर जिन पर ज्ञान प्रगट करता है वही उनको इलहाम और उसका ठीक२ अभिप्राय भी बताता है जिससे वह ऋषि उसका नियमानुसार प्रचार कर किसी देश में न होने से उस में कोई कुछ बढ़ा भी नहीं सकता। पांचवें क़िस्से कहानी उसमें न हों। जो किताब सृष्टि के आदि से होगी उसमें क़िस्से कहानी होना ही सम्भव नहीं और जिसमें क़िस्से कहानी होवे वह सृष्टि की आदि से न होगी, इसलिये ऐसी किताब ईश्वरीय कहाने के योग्य नहीं। इसका स्पष्ट आशय यह है कि मनुष्य बिना शिक्षा के अपने विचारों का प्रचार नहीं करसकता, और बिना शिक्षा का बीज बोये विद्याकी परम्परा नहीं पड़ सकती, क्योंकि संसार में बिना कारण के कोई वस्तु उत्पन्न नहीं हो सकती, इसलिये शिक्षा

के बीज इलहाम का होना शिक्षा से प्रथम ही आवश्यकीय है जिससे शिक्षा की प्रणाली बन जावे। जब एक बार शिक्षा प्रणाली बन गई फिर किसी इलहामकी आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि आजतक कोई भी मनुष्य बीज नहीं बना सका. हां बीज के द्वारा बीज उत्पन्न कर सकता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य ईश्वर के ज्ञान में मिलावट नही कर सकता, और जिस में मिलावट हो जावे वह ईश्वर का ज्ञान नहीं। जिस प्रकार ईश्वर ने सूर्य को मनुष्य की आंख की सहायता के लिये बनाया है। अब यदि कोई मनुष्य चाहे कि सूर्य में कुछ मिला दूं तो असम्भव है। परन्तु सूर्य को मनुष्यों की आंखों की ओट में कर सकते हैं जो केवल आँखपर हाथ रखनेसे होसकता है यद्यपि प्रायःसूर्य मनुष्यों की आंखों से ओट हो जाता है, परन्तु उस समर्थ परमात्मा नया सूर्य नहीं बनाते और न पिछले सूर्य को रद्दी करते हैं। निस्सन्देह मनुष्य के बनाए दीपक आदि की यह अवस्था अवश्य होती है कि वे सर्वदा बदलते रहते हैं। जब नए प्रकार का सुन्दर दीपक तैयार होजाता है तो पुराने और बुरे को रद्दी कर देते हैं।

जिस पुस्तक में मनुष्यों के घरेलू झगड़े और किस्से कहानी पाये जावें वह एक प्रकारका मनुष्योंका इति-

हास होसकता है। उसको किसी प्रकारभी इलहाम नहीं कह सकते। छटे उसमें कोई बात सृष्टि नियम और प्रत्यक्ष के विरुद्ध नहो। इसलिये कि सृष्टि नियम ईश्वर का बनाया हुआ है अर्थात् वह ईश्वरीय कर्म है; और जो किताब इलहामी होगी वह उसका ज्ञान होगी। नेक आदमियोंके कर्म वचन में अन्तर नहीं होता। जो मनुष्य कहे कुछ और जब करने का समय आवे तो करे कुछ तो उस को अच्छा आदमी नहीं कहते। ईश्वर जो सारी सत्यताओं का भण्डार है, उसके लियेतो ऐसा कहना सम्भव ही नहीं कि उसके कर्म और कथनमें भेद है। एक अज्ञानी मनुष्य प्रायः अपनी स्मृति की न्यूनता के कारण, अपनी बात को आप काटता है या एकबात को दुबारा कहता है जिसका कारण उसके ज्ञान और स्मृति की न्यूनता समझी जाती है। परन्तु सर्वज्ञ ईश्वर ऐसा नहीं कर सकता उसके वाक्य में अकारण पुनरुक्ति और परस्पर विरोध नहीं होसकता इसलिये जिस किताब में परस्पर विरोध पाये जावें वह किसी प्रकार भी ईश्वर का ज्ञान नहीं होसकती। अब हम क़ुरान की भीतरी बातों से सिद्ध करते हैं कि क़ुरान में प्रत्येक प्रकार के दोष पाये जाते हैं जिससे वह ख़ुदा का कलाम तो क्या किसी बुद्धिमान मनुष्य का भी नहीं होसकता।

पहिला गुण यह कि वह किताब ईश्वर की निन्दा न करती हो। हम जहां तक देखते हैं क़ुरानशरीफ़ के विषयों में ऐसे स्पष्ट शब्द विद्यमान हैं जिससे खुदा की निन्दा होती है देखो क़ुरान-मन्ज़िल १ सिपारा २ सूरते बक़—

मन्जल्लज़ी युक़्रेज़ुल्लाह क़र्ज़न् हसनन् फ़युज़ाय़फ़हू लहूअज़्ब आफ़न् कसीरतन् वल्ला हो यक़्बिज़ो व यब सुतो वइलोहितुर्जऊन।

अर्थात्:—कौन शख्स है वह जो क़र्ज़ दे अल्लाह को क़र्ज़ अच्छा पस दुगना करे उसको वास्ते उसके दगना बहुत और अल्लाह बन्द करता है और कुशादः करता है और तर्फ़ उस के फेरे जाओगे।

अब देखिये क़ुरान ख़ुदा को भी ऋण की आवश्यकता वाला बताता है और ऐसी आवश्यकता प्रतीत होती है कि दुगुना देने की प्रतिज्ञा करता है आज कल का नियम यह है कि गवर्नमेंन्ट तो चार पांच आने का ही सूद देती है और कोठी वाल बैंकर ॥) का सूद देते हैं और ग्रामणी पुरुष १॥) से ३ᐟ) तक का सूद देते हैं। ज्वारी लोग जिनका विश्वास बहुत कम होता है ᐟ) फ़ी रुपया सूद देते हैं न मालूम ऐसी आवश्यकता क़ुरानी खु़दा को क्या पड़ी है, कि लोगों में उसका इतना

अविश्वास बढ़ा है कि वह दुगना सूद देने की प्रतिज्ञा करता है और क़र्ज़ माँगता है, परन्तु फिर भी लोग उधार नहीं देते। इसका कारण कदाचित् वह आयत हो जिस मे खु.दा को मक्र करने का दोष लगाया है, नहीं तो खु.दा का इतना अविश्वास क्यों? देखो सूरत आल उमरान—

"वमकरू व मकरू अल्लाहो खैरुल् माकरीन"

अर्थात् मक्र किया उन्होंने (काफ़िरों ने) और मक्र किया अल्लाह ने; अल्लाह बेहतर मक्र करने वाला है, पाठकगण! काफ़िरों ने जिस ख़ुदा को त्याग रक्खा है, वह दफ़ा ४२० ताज़ीरात हिन्द के अपराध का कर्त्ता होवै तो क्या आश्चर्य है? परन्तु जिस समय क़ु.रानी खु.दा भी भजन करे तो उसका विश्वास कौन करे? इसीलिये तो वह बारम्बार ऋण मांगता है, परन्तु अविश्वास के कारण मनुष्य उसको देने के लिए तैयार नहीं होते देखो और स्थान पर भी खु.दा को ऋण लेने की आवश्यकता पड़ी है देखो क़ुरान मन्ज़िल ७ सिपारः २८ सूरतुल तगाबुन—

"इन्तुक़्रेज़ुल्लाहं क़र्ज़न् हसनैय ज़्वाइफ़हो लकुम् व यग़फ़िर लकुम् वल्लाहो शकूरुन् हलीम"

अर्थात् यदि ऋण दो अल्लाह को ऋण अच्छा, दुगना करेगा उसको वास्ते तुम्हारे, और बख़शेगा वास्ते तुम्हारे, और अल्लाह क़दरदान है अमल वाला।

पाठकगण! देखिये .क़ुरानी .ख़ुदा बारम्बार ऋण मांग रहा है और अविश्वास के कारण दुगना देने की प्रतिज्ञा करता है, परन्तु फिर भी ऋण देने को लोग तैयार नहीं हैं। ज्ञात होता है कि लोग .ख़ुदा के भक्त से डर कर उसको ऋण देने को तैयार नहीं हैं वर्ना इतने बड़े सूद पर ऋण क्यों नहीं मिलता! देखिये .ख़ुदा और स्थल पर भी ऋण मांगता है-देखो .क़ुरान सिपारः २७ सूरतुल हदीद पन्—

"ज़ल्लज़ी युक़्रे ज़ुल्लाह क़र्ज़न् हसनगन्
फ़युज़्वाअफ़ो हूलहू अज्व आकृत् कसीरतन"

अर्थात् कौन पुरुष है जो ऋण दे अल्लाह को ऋण अच्छा, पस दुगना करे उसके वास्ते उसके और वास्ते उनके सवाब वा करामात। यद्यपि ख़ुदा ने दुगना देने और सवाब आदि बहुत सी चीज़ों के लालच दिये हैं परन्तु मनुष्यों को इस पर विश्वास ही नहीं होता—विश्वास हो कैसे? जब कि ख़ुदा अपनी बातों को तत्काल ही काट देता है! यदि उसकी कोई सी बात अटल होती तो उस पर विश्वास भी किया जाता। देखो

खुदा मुसलमानों को लड़ा कर अपना राज्य स्थापित करना चाहता है इसके स्थान में अपने रसूल की सहायता स्वयं खुदा करता, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् था, परन्तु वारम्वार क़र्ज़ मांगने और मुसलमानों को लड़ाकर लाभ उठाने और बात की सत्यता के लिए अनेक क़समें खाने से ज्ञात होता है कि न वह क़ादिर मुतलक़ (सर्वशक्तिमान) है न वह सर्वज्ञ है, किन्तु उस का ज्ञान बहुत ही अल्प है। देखो खुदा अपनी बात को आपही काटता है देखो कुरान सिपारः सूरे अनफ़ाल—

"य अइयो हन्नबीयो हर्रे ज्विल् मोमीनीय अलल् क़िताले इं यकुम् मिन् कुम् वेश्रूरून स्वाविरून् यग्लिबू में अतैने वइं यकुम् मिन् कुम् मे आत्विं यगलिबू अल्फ़म् मिनल्लज़ीन कफ़रुबे अन्नहुम् क़ौमुल्-लायफ़्क़हूना"।

अर्थात् ए नबी रग़बत दिला मुसलमानों को ऊपर लड़ाई के अगर हों तुममें से बीस आदमी सब्र करने वाले ग़ालिब आवें दो सौ पर, और अगर होवें तुम में से ग़ालिब आवें एक हज़ार पर उन लोगों से कि काफ़िर हुए निस्बत इस के कि नहीं समझते। अब विचारिये कि क़ुरानी खुदा यहां मुसलमानों को मारकाट

की शिक्षा देता है और साथ ही यह वरदान भी देता है यदि तुममें से १०० मनुष्य होंगे। और १००० पर विजयी होंगे। अब देखिये ख़ुदा का वरदान और प्रतिज्ञा कितनी शीघ्र असत्य होते हैं। देखो, क़ुरान—

"अल आनखफ़्फ़फ़ल्लाहो अंन्‌ कुम्‌ व अ़ेलमं अन्नं फी कुम्‌ ज़्वअम्मन फ़ं इँ यकुम मिन्‌ कुम्‌ मेंअतुन्‌ स्वीवरे त्विं यग़्लेन्‌ मे अतैने नइँयकुम्‌ मिन्‌ कुम्‌ अल फुँइं यग़लबु अल्‌फ़ैन वेइज़्‌ निल्लाहे वल्लाहो मे असचा विरनि"।

अर्थात्—अब तख़फ़ीफ़ की अल्लाह ने तुमसे, और जाना यह कि बीच तुम्हारे नातवानी है, पस अगर होवें तुममें स सौ सब्र करनेवाले ग़ालिब आवेंगे, दो सौ पर, अगर होवें तुम में से दो हज़ार ग़ालिब आवेंगे तुम में से दो हज़ार पर साथ हुक्म ख़ुदा के, और अल्लाह साथ सब्र करने वालों के है।

लीजिये ख़ुदा साहब की भी अज्ञानता प्रगट होगई। कि पहले तो दस के सामने एक को तैयार किया। जब देखा कि निर्बलता है, तो दो के मुक़ाबिले में एक को तैयार किया। प्रश्न तो यह उत्पन्न होता है किस जि.

समय क़ुरानी ख़ुदाने पहिले दुआ दी थी कि "सौ होंगे तो हज़ार का मुक़ाबला कर सकोगे"। उस समय उस को इस बात का ज्ञान था या नहीं कि मुझे यह आज्ञा मनसूख़ करनी पड़ेगी ? यदि कहो कि था तो फिर अपने ज्ञान के विरुद्ध ऐसी झूंठी दुआ क्यों दी ? क्या उस समय उसको मुसलमानों की निर्बलता का ज्ञान नहीं था ? जहां तक ज्ञात होता है ख़ुदा को पहिले प्रतिज्ञा करते समय इस बात का ज्ञान नहीं था। यदि ज्ञान होता तो क्यों उस में यह शक्ति न थी कि मुसलमानों की निर्बलता को दूर करके अपनी पहिली प्रतिज्ञा को पूरा करता?यदि कहो कि यह शक्ति थी, तो पहिले वायदे को क्यों मनसूख़ कर दिया ? अगर कहो कि न थी, तो वह सर्वशक्तिमान् कैसे हो सकता है ? हमने जितने क़ुरान के विषयों को पढ़ा हमने ख़ुदा की निन्दा के अतिरिक्त ख़ुदाका पूरा लक्षण कहीं भी नहीं पाया। बहुत से लोग कह देंगे कि क़ुरान ने ख़ुदा की निंदा कहां पर की है ? तो उनको ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिये कि सर्व स्वामी ईश्वर को ऋणका अभिलाषी बतलाना शुद्ध परब्रह्म को मक्कार (धूर्त्त कहना और ख़ुदा को अपनी प्रतिज्ञा को दस मिनट के उपरान्त मनसूख़ करने वाला बताना, निन्दा नहीं और क्या है ? और भी क़ुरान में बहुत आयतें और विषय ऐसे हैं कि जिनमें ख़ुदा की

निन्दा विद्यमान है परन्तु दिग्दर्शनमात्र कराकर दूसरे प्रकरण को आरम्भ करते हैं, क्योंकि लोग इतनेही से समझ जावेंगे कि क़ुरान ईश्वर की निंदा करनेवाला है। दूसरी बात यह है कि जब क़ुरान का उतारना बताया जाता है; उस समय क़ुरान की आवश्यकता थी या नहीं! जहां तक विदित होता है क़ुरान में ऐसी कोई नई बात नहीं जो क़ुरान से पूर्व विद्यमान हो हमने बहुत से मौलवियों से प्रश्न किया कि बतलाइये क़ुरान से पहिले कौनसा विद्यासम्बन्धी विषय तथा जिसके बतलाने के लिए क़ुरान आया? बहुत से लोगों ने तो इस का उत्तर ही नहीं दिया। परन्तु एक दो मनुष्यों ने यह कहा कि वहदतकुल ज़ात वहदत फ़िल् सिफ़ात और वहदत फ़िल्, इबादत अर्थात् एकमेवा द्वितीयं ब्रह्म, नतत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते। और तमेव विदित्वाऽति मृत्यु मेति, ये क़ुरान से पहिले संसार में न थीं। यह इसलाम का कथन नितान्त असत्य है क्योंकि क़ुरान से पूर्व वहदतकुल ज़ात की शिक्षा उपनिषदों में विद्यमान थी। दूसरे श्री स्वामी शंकराचार्य जी महाराज, जो एक ही ब्रह्म के मानने वाले थ, मुहम्मद साहब से पूर्व हुए हैं। उपनिषद की यह श्रुति कि ' एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म ' वहदतकुल ज़ात को सिद्ध करती है और उसका अनुवाद कलमे का पूर्वार्द्ध लाइला लिल्लिल्लाह है

अर्थात् एक ही परब्रह्म है दूसरा नहीं। इसलिये जब कि ब्रह्म होने की शिक्षा प्रचलित थी तो कुरान के उतरने की कोई आवश्यकता नहीं। यदि यह कहा जावे कि वहदतफ़िल सिफ़ात के लिये कोई कुरान की आवश्यकता थी तो यह भी असत्य है क्योंकि कुरान से बढ़कर यह शिक्षा उपनिषदों में विद्यमान थी जैसे "नतत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते"। यदि कहो कि वहदत-फ़िल इबादत के वास्ते कुरान आया तो भी असत्य है क्योंकि उपनिषद् वेद और गीता आदि सब ही ग्रन्थ एक ही ईश्वर को बतलाते हैं जो सबके सब कुरान से बहुत पहिले के हैं। यथा "तमेव विदित्वातिमृत्युमेति" आदि। इसके विरुद्ध कुरान, खुदा को वाहिद (एक) सिद्ध नहीं कर सकता किन्तु उस के साथ काम करने में फरिश्तों की एक सेना विद्यमान है, इसीलिये उस का नाम "रब्बिलअफवाज" अर्थात् फौजों का स्वामी भी है।

कोई काम नहीं, जो कुरानी खुदा अपनी शक्ति से कर सकता हो किन्तु प्रत्येक काम के लिये पृथक् २ फरिश्ते नियत हैं यहाँ तक कि कुरान के उतरने तक के लिए भी हजरत जिबराईल से काम लेना पड़ा। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि हजरत जिबराईल तो, मुसलमानों के कथनानुसार, खुदा के पास जाही नहीं सकते थे जैसा कि लिखा है 'अगर यकसरे मूए बरतर-

परम् । फरोगे तजल्ली बसोज़द परम्" अर्थात् यदि कुछ भी इससे आगे बढ़ूं तो खुदा का प्रकाश मेरे पर जलादे । जब जिबरईल खुदा तक पहुंच नहीं सकते थे तो जिबरईल तक खुदा का पैग़ाम कौन लाया ? यदि कहो वहांतक खुदा की क़ुदरत से आया तो क्यों कर खुदा के कामों में फरिश्तों और पैग़म्बरों को शरीक करते हो सीधे आर्यसमाज की तरह मानो कि ईश्वर सर्वत्र व्यापकहै । यद्यपि वह अपनी शक्ति से सारे काम करता है । मुसलमान सारे कामों में फरिश्ते आदि को सम्मिलित करते हैं और रसूलों के खुदा के नाम तो उनके विश्वासकी नींव (कल्मा) में सम्मिलित होगए हैं जो मनुष्य रसूल को न मानें वह मुसलमान नहीं हो सकता, और महत्व प्रकाश करने के लिए खुदा ने फरिश्तों को, आदम के सिजदः करने की आज्ञा दी । जिन फरिश्तों ने आदम को सिजदः किया वे सब नेक होगये और जिन फरिश्तों के गुरु आज़ाज़ील ने आदम को सिजदः करना पाप समझा, वह लानती (धिक्कारित) हुआ । अब सोचना चाहिये कि क़ुरान से वहदत फ़िल इबादत की शिक्षा कैसे मिल सकती है । जो ईश्वर के अतिरिक्त दूसरे को दण्डवत् करने की आज्ञा दे वह १ सन्मार्ग से हटाने वाला होता है ।

---

१ गुमराह

देखो क़ुरान सिपारह १४ सूरतुलहर --

"व लक़द ख़लक़नल् इन्सानं मिन् स्वल स्वालिम् भिन् हम इम्मस्नून"

अर्थात् और, अलबत्ता, तहक़ीक पैदाकिया हमने आदमी को बजने वाली मट्टी से, जो बनी हुई थी कीचड़ सड़ी हुई से (यहां खुदा ने यह नहीं बताया कि सड़ी हुई कीचड़ को किस चीज़ से बनाया ? क्योंकि मट्टी और पानीसे मिलकर कीचड़ बनती है) कि कीचड़ से मट्टी बनती है।

"वल् जान्न ख़लक़् नाहो मिन क़ब्लो मिन्ना-रिस्सुम्"

अर्थात् और जिन्नों को पैदा किया हमने उसके पहिले इससे आग लोनकी से. इस आयत से पता चलता है कि फ़रिश्ते और जिन्न एकही हैं. क्योंकि जिन्नों को आग से पैदा किया है और फ़रिश्तों की उत्पत्तिका कहीं भी चर्चा नहीं किया है कि वे किस चीज़ से बनाये गये?

"वइज काल रब्बक लिल् मलायकने इन्नी खालेकुम् वशरम् मिन् स्वल् स्वलिम् मिनहम् इस्मसनून।

अर्थात् और जब और कहा परवरदिगार तेरेने वास्ते फ़रिश्तों के तहक़ीक मैं पैदा करने वाला हूं आदमी को बजने वाली मट्टी से जो बनी थी कीचड़ सड़ी हुई से।

फ़इज़ा सव्वतहू व नफ़ख़्तो फ़ी हे मिन् रूही फ़क़ ऊलहू साजिदीन"।

अर्थात्--पस जब दुरस्त करूं मैं उसको और फूँकूँ बीच उसके रूह अपनी से बस गिर पड़ो वास्ते उसके सिज्दः करते हुए।

"फ़सजदल मलायकतो कुल्लहुम् अजमऊन इल्ला इबलिस ऐं यकूनम अस्साजिदीन"

अर्थात् पस सिज्दः किया फरिश्तों ने सबने इकठ्ठे, कहा ऐ इबलीस क्या है वास्ते तेरे, यह कि न हुआ तू साथ सिज्दः करने वालों के।

"कालखम् अकुल्ले असजुदं लेबशरिन् खल-क्तहू मिन् स्वलस्वालिम मिन् हमइम मसनून"।

अर्थात् कहा कि मैं नहीं लायक़ इस बात के कि सिज्दः करूं वास्ते बशर के कि पैदा किया बजने वाली मिट्टी से कि बनी थी कीचड़ सड़ी हुई से।

कालें फ़ख्रुज मिन्हा फ़इन्नक रजीमुन व इन्नं अलैकन् लाअनत इला यौमद्दीन"।

अर्थात् कहा पस निकल उसमें पस तहक़ीक़ तू रादः हुआ है, और तहक़ीक़ ऊपर तेरे लानत है दिन क़यामत तक।

"क़ाल रब्बेक अनन ज़्विनी इलायौमे युब आसून"

अर्थात् कहा ऐ परवरदिगार मेरे पस ढील दे मुझ को उस दिन तक कि जिन्दा किये जावें।

"काल फइन्नक मिलन मुन ज्वरीन"।

अर्थात् कहा बस तहकीक तू ढील दिये गयों से है।

'इलायौमिल वकातिल मअलूम'।

अर्थात् तर्फ दिन वक्त मालूम के।

काल रब्बेयमा अगवैतनी लऊजईं यन्नमल मुर्म फ़िल अर्ज़ै वलउमूव यन्नहुम अज़मईन इल्ला-इब्यादक मिन हुमुल मुखलसीन"।

अर्थात कहा ए रब्ब मेरे व सवब इसके कि गुम-राह किया तूने मुझको अलबत्ता जीवन दूंगा मैं वास्ते उनके बीच जमीन के, और अलबत्तः गुमराह करूंगा मैं उन सबको। उपरोक्त संवाद से जो कुरानी खुदा और ब्रह्मवादियों में श्रेष्ठ अर्थात् शैतान के बीच स्पष्ट हुआ स्पष्ट प्रगट है कि कुरानी खुदा वास्तव में पाप फैलाकर सन्मार्ग भ्रष्ट करना चाहता था, परन्तु वेडर और सच्चे पुरुष कभी भी अपने धर्मसे च्युत नहीं होते, इसलिये हजरत शैतान ब्रह्म वेत्ताओं में श्रेष्ठ (शैतान) एक मेव द्वितीय ब्रह्म का विश्वासी बनारहा और शेष सब फरिश्ते मनुष्य पूजक बनगये। पाठकगण! कुरान के कर्ता को इस कहानी लिखने से जो तात्पर्य है वह तो आप जान गये होंगे, परन्तु कुछ मित्रों को इस प्रकरण के लिखने

का अभिप्राय कदाचित् ज्ञात न हो, इसलिये हम भी संक्षेप से कहे देते हैं। यह परस्पर का संवाद केवल इस लिये लिखा गया है कि लोग पैग़म्बरों की आज्ञापालन से इन्कार न करें, और यह न कहने लगें कि खुदा और मनुष्यों के मध्य में तुम कौन हो ? इसका पता इसलाम के कलमेसे भी मिलजाता है जहाँ लिखा है "मुहम्मदर्रसूलिल्लाह" क्या केवल मुहम्मद साहिब ही खुदा की ओर से भेजेहुए थे ? शेष जितने पैग़म्बर आये वे खुदाके भेजे हुए नथे ? मुहम्मदसाहब का कुल पैग़म्बरों को छोड़ कर, यहाँ तक की आदम को, जिसको, क़ुरान के कथनानुसार, फ़रिश्तों से सिजदः कराया, नितान्त छोड़कर, केवल मुहम्मद साहब को रसूल बताना स्पष्ट बतारहा है कि यह वाक्य कोई विशेष स्वार्थ रखने वाले मनुष्यों का है। इस कलाम से सिवाय मुहम्मदसाहबका अपना स्वार्थ सिद्ध होने के और कोई आशय नहीं निकल सकता है। हमारे मित्र मौलवी साहबान प्रायः कह देते हैं कि यह लेख शिर्क को प्रगट नहीं करता किन्तु खुदाने एक पुराना क़िस्सा वर्णन किया है। यदि इस क़िस्से का वर्णन एक स्थल पर होता तो हम दुर्जन संतोष के न्याय से मान भी लेते, परन्तु क़ुरान में इसकी चर्चा बहुत स्थानों पर आई है इससे स्पष्ट है कि क़ुरान के बनाने वाले की यह प्रबल इच्छा थी कि लोग इस

क़िस्से को भले प्रकार याद करलें जिससे रसूल की आज्ञाओंसे इन्कार करने में शैतान के समान लानती होने का भय लगा रहे। प्रथम ही इसका उल्लेख सूरतोवक़र में आया है यथा—

वइज क़ाल रब्बोक लिल मलायकते इन्नी जायलुन् फ़िल अर्ज़ें ख़लीफ़ा क़ाक अत जल फ़ीहा मन् युफ़सदो फ़ीहा वयुसफ़ेकुद्दीमाअ बन हनो सब्बेहो बेहम्देक वनुक़द्देसो लक क़ालइन्नी आलमो माला तआलमून्"

अर्थात् जब कहा परवरदिगार तेरे ने वास्ते फरिश्तों के तहक़ीक़ मैं बनाने वाला हूं बीच ज़मीन के नायब, कहा उन्हों ने क्या बनाता है बीच उसके उस शख़्स को कि फ़िसाद करे बीच उसके, और डालेगा लहू, हमया कि बयान करते हैं साथ तारीफ़ तेरीके और बाक़ी बयान करने वास्ते तेरे। कहा तहक़ीक़ मैं जानता हूं।

व अल्लमा आदमल अस्माअ कुल्लहा सुम्मा अरदहुम् अलल् मलायक ते फ़क़ाल अम्बे ऊनी बे अस्माये हा उलाये इनकुन्तु स्वादेक़ीन्।

अर्थात् और सिखाये आदमको नाम सारे, और सामने किया उसको ऊपर फरिश्तों के और कहा उनको बताओ मुझको नाम उन के अगर हो तुम सच्चे।

"काल सुभानक लाइल्मा लन इल्ला मा अल्लम् तन इन्नक अन्तुल् अलीमुल् हकीम"।

अर्थात् कहा उन्होंने पाक है तू, नहीं इल्म हमको मगर जो कुछ सिखाया तू ने हमको तहकीक तू है जानने वाला हिकमत वाला।

काल या आदमो अम्बेहुम्बे अस्माये हुम् फ़लम्मा अम्बाहुम् बे अस्मायेहिम्, काल अलम अकुल्लम्। इन्नी आलमो गैवस्समा वातेवल् अर्द व आलमो मातुबूना वमा कुन्तुम् वइज़ कुल्न लिल् मलायकतिजुदूले आदम फसजदू इल्ला इबलीसा अवावस्तक् बर वकान मिन् अल काफ़िरनि"।

कहा ऐ आदम! बताओ उनको नाम उनके पस जब बताये उनको नाम उनके। कहा क्या न कहा था मैंने तुमको तहकीक मैं जानता हूं छिपी चीजें आसमानों और ज़मीन की और जो जानता हूं जो ज़ाहिर करते हो और थे तुम छिपाते। और जब कहा हमने वास्ते फरिश्तों के सिजदः करो वास्ते आदम के पस सिजदः किया मगर शैतान ने न माना और तकब्बुर, किया और था वह काफ़िरों से।

ऐ वहदत किल जात का दावा रखने वालो! सोचो कि जो आदमको सिजदः न करे, वह काफिर है। जबकि खुदा नहीं मानने वाले भी काफ़िर हैं और

आदम को सिजदः न करने वाले भी काफिर थे तो क्या अब भी वहदत किल जातकी डोंग मारोगे ? यही विषय कुरान मंजिल २ सिपारः ७ सूरते रोरा।

"वलक़द खलक़्ना कुम् सुम्म सव्वरना कुम् सुम्म् क़ुल्लिना लिल् मलायकातिस्सजदू लि आदम फ़स-जदू इल्ला इब्लीसा लम् यकुन् मिनस्साजदीन"।

अर्थात् और अलबत्ता तहक़ीक़ पैदा किया हमने तुमको, फिर सूरतें बनाईं हमने तुम्हारी फिर कहा हमने वास्ते फरिश्तों के सिजदः करो वास्ते आदम को सिजदः किया उन्होंने, मगर इबलीस न हुआ सिजदः करने वालों में से—

'क़ालमा मनआक अल्लाह तसजुद इज़ा मर्तक, क़ाल अन खैरुम्मिन्हो खलक तनी मिन्ना-रिन् व खलकतहू मिन्तीन।

अर्थात्—कहा किस चीज़ ने मना किया तुझको न सिजदः किया तूने जब हुक्म किया मैंने तुमको कहा मैं बेहतर हूं उससे पैदा किया तूने मुझको आग से और पैदा किया उसको मट्टी से।

"क़ाल फ़ह्बित् मिनहा फ़मा यकूनो लक अन्त तकब्बुरो फ़ीहा फ़ख़रुज इन्नक मिन् स्साग़िरीन"।

कहा पस उतर इसमें से पस नहीं लायक़ वास्ते

तेरे यह कि तकब्बुर करे तू वीच उसके बस निकल तह-क़ीक़ तू ज़लीलों से हैं।

"क़ालनज़ुर्नी इलायो मे युब् असून"

अर्थात्—कहा ढील दे मुझको कि उस दिन तक कि क़बरों से उठाये जावें।

"क़ाल इन्नक मिनल् मुनज़रीन"।

कहा तहक़ीक़ तू ढील दिये गयो में से है।

"क़ाल फबेमा लगवैतनी लाक़ादन्नलहुम् सिरातकऌ् मुस्तक़ीम्"।

अर्थात् कहा पस क़सम है उसकी गुमराह किया तूने मुझको अलबत्तः बैठूंगा वास्ते उसके राह तेरी साधी पर।

पाठकगण! इसी विषय को कुरान सिपारः २३ मंज़िल ६ सूरते स्वाद में भी कहा है—

इज़क़ाल रब्बोक लिल् मलायकतेइन्नी खाले-कुन् बशरिम्मिन्तनि।

अर्थात्—जिस वक्त कहा परवरदिगार ने वास्ते फरिश्तों के तहक़ीक़ मैं पैदा करने वाला हूं इन्सानों को मट्टी से।

"फइज़ा सव्वेतहू व नफ़ख्तो फ़ीहे मिंरूही फ़क़ू-ऊलहू साजदीन"।

अर्थात्—पस जिस समय दुरुस्त करूं उसको और

फूंकूं बीच उसके रूह अपनी, जमीन में पस गिर पड़ो वास्ते उसके सिजदः करते हुए।

"फसजदल् मलायकतो कुल्लहुम् अजमऊन"।

पस सिजदः किया फरिश्तों ने सब इकट्ठे।

"इल्ला इबलीस स्तकबर व कान मिनल् काफिरीन"

मगर इबलीस ने तकब्बुर किया और था काफिरों से।

पाठकगण! आगे वही विषय है जो पीछे तीन जगह दिखा चुके हैं। प्रथम तो इस पुनरुक्ति को, जो आदम को सिजदः के लिये है, देखकर कोई विद्वान् नहीं मान सकता कि कुरान एक ही ईश्वर की पूजा बताता है जब कि आदम को न सिजदः करने वाले काफिर हैं, मुहम्मद को रसूल बनाने वाले काफिर हैं। कहां तक कहें बहुत सी वस्तु हैं जिनको कुरान ने खुदा के साथ विश्वास में सम्मिलित कर लिया है। हमने जहां तक पता लगाया है उससे यही परिणाम निकलता है कि कुरान केवल मुहम्मद साहब की आवश्यकता पूरा करने वाला वाक्य है। जब मुहम्मद साहब ने कोई ऐसा कर्म किया जिसके कारण पब्लिक ने उनको बुरा कहना आरम्भ किया, झट मुहम्मद साहबने एक आयत गढ़दी,

ज़ैसा कि प्रायः क़ुरान में पाया जाता है। उसका एक उदाहरण हम प्रस्तुत करते हैं—हज़रत मुहम्मद साहब ने ज़ैद नामी एक मनुष्य को गोद ले लिया था, और उसका ज़ैनब नामी एक सुन्दर स्त्री से विवाह भी कर दिया था। एक दिन हज़रत ज़ैनब के घर अचानक चले गये और ज़ैनब को बेपरदा देख लिया। हज़रत की तबियत भी आशिक़ मिज़ाज थी, जैसा उनका जीवन चरित्र पढ़ने से और सारे मुसलमानों के लिये चार स्त्रियां और अपने लिये उनसे अधिक करने से, विदित होता है। उन्होंने अन्दर पहुंच कर उसकी प्रशंसा की। ज़ैनबने जब यह हज़रत का विचार ज़ैद से कहा। ज़ैद मुहम्मद साहब का सच्चा हितैषी था उसने झट ज़ैनब को तलाक़ देदी और हज़रत ने बिना निकाह उसको अपनी स्त्री बना लिया। जब लोगों में इस बात की चर्चा उठी और हज़रत की निन्दा होने लगी क्योंकि यह बात ही इस प्रकार की थी। एकतो लेपालक की स्त्री! दूसरे बिना निकाह उसको स्त्री बना लेना!! सर्व साधारण में हलचल क्यों न मचती? जब हज़रत ने देखा कि लोग बहुत बदनाम करते हैं तो एक आयत उतारदी—देखो क़ुरान २२ वाँ पारः सूरत एहज़ाब—

"वमाकाने लेमोमिनिन् , वलामोमिनते , लिन्, इज़ाक़दल्लाहो वरसूलहू अमरन् ऐं यकून लहुमुल्

खेयरतो मिन् अम्रेहिम् वमैं या स्विल्लाहा वरसू-
लहू फ़क़द्‌ज़लाह दलालम् मोबीन्।

अर्थात् और नहीं है लायक़ वास्ते किसी मर्द मुस-
लमान के और न औरत मुसलमान के जिस वक्त मुक़र्रिर
करे खुदा और रसूल उसका कोई काम यह कि होवे वास्ते
उनके इख़्त्यार काम अपने से और जो कोई नाफ़रमानी
करे अल्लाह की और रसूल उसके की पस तहक़ीक़ गुमराह
हुआ गुमराही ज़ाहिर!

"वइज़तक़ूलोलिल्लज़ी अन्नमल्लाहो अलै-
हेव अन अमत अलैहे अम्सिक अलैक ज़ौजक
वऽक़िल्लाह वतुखफ़ी फ़ीनफ़सेकमल्लाहो मुब्
दीहेव तख़्शन्ना सवल्ला हो अहक्को अन्तख़्
शफ़लम्मा क़द ज़ैदुन्मिनहावतरन् जव्वज ना कहा
ले कैला यकून अलज़ुमोमिनीन हरजुन् की अज़-
वाजे अदए या एहिम् इज़ा क़दौमिन् हुन्ना वतर
वकान अम् रुल्लालाहे मफ़्ऊल"।

अर्थात् और जिस वक्त कि कहता था तू वास्ते उस
शख़्स के कि निअमत की है तू ने ऊपर उसके ऊपर
ध्यानरख ऊपर अपनी बीवी को और डर ख़ुदा से।
और छिपाता था बीच जो अपने के जो कुछ अल्लाह
ज़ाहिर करने वाला है। और डरता था लोगों से और

अल्लाह बहुत लायक़ है उसका कि डरे तू उससे पस जब पूरी करी ज़ैदने उससे हाजित ब्याह दिया हमने तुझ से उसको तू कि न होवे ऊपर ईमान वालों के नंगी बीच बीबियों के बालकों उनके के जब रफ़ा की उनसे हाजित और है हुक्म ख़ुदा किया गया।

इसके हाशिये पर शाह अबदुल क़ादर लिखते हैं— हज़रत ज़ैनब रसूल की फूफी की बेटी और क़ौम में अशराफ थीं। हज़रत ने चाहा कि उनका निकाह करदें ज़ैद बिन हारिस से ये ज़ैद असल अरब थे, पकड़ ज़ालिम लेगया था। शहर मक्के में उनको हज़रतने मोल ले लिया। दस वर्ष की उम्र में इनके बाप भाई ख़बर पाकर मांगनेको आये। हज़रतके देने पर यह घरजानेको राज़ी नहीं हुए और हज़रत से हुज्जत की। इसलाम से पहिले के रिवाज के मुआफ़िक़ हज़रतने उसको बेटा बना लिया। हज़रत ज़ैनब और उनके भाई राज़ी न हुए। यह आयत उतारी और राज़ी होगये और निकाह कर दिया। और देखो हाशिया सुफ़ा ५२३ हज़रत ज़ैनब ज़ैद के निकाह में आई तो वह उनकी निगाह में हक़ीर जची मिजाज़ की मुआफ़िक़त न हुई तो लड़ाई हुई। ज़ैद हज़रत से आकर शिकायत करते और कहते थे कि इसे छोड़ता हूं। हज़रत मना

करते थे कि मेरी खातिर से तुझको क़ुबूल किया है। अब छोड़ना दूसरी ज़िल्लत है। जब बार २ क़ज़िया हुआ। हज़रत के दिल में आया कि अगर नाचार ज़ैद छोड़देगा तो ज़ैनब की दिलजोई बग़ैर इसके नहीं कि मैं उस से निकाह करूँ। लेकिन मुनाफिक़ों की बदगोई से अन्देशा गया कि कहेंगे कि बेटेकी जोरू घरमें रक्खी. हालांकि लेपालकको हुक्म बेटे का नहीं। किसी बात में अल्लाह तालाने हज़रत ज़ैनब की खातिर रक्खी बाद तलाक़ के हज़रत के निकाह में देदिया। अल्लाह के फ़रमाने ही से निकाह बंधगया। ज़ाहिर में निकाह की हाजित नहीं हुई। जैसे अब कोई मालिक अपने लौंडी ग़ुलाम को बांध दे, ग़रज़ पूरी होने पर छोड़दे"।

पाठकगण! इस घटना को नेक ध्यान से पढ़िये और शाह अबदुल क़ादिर के शब्दों को सोचिये तो क्या यह फल नहीं निकलता कि बिना निकाह मुहम्मद साहब ने अपने बेटे की जोरू को घर में रख लिया। शाह साहब का यह कहना था। दरअसिल "लेपालक को हुक्म बेटे का नहीं" किस प्रकार ठीक मान लिया जावे? क्योंकि यदि हज़रत का गुप्त निकाह बंध जाने से पहिले ये आयतें उतरीं तो लोगों को यह विचार उत्पन्न होता कि मुहम्मद साहब ने जो कुछ किया ख़ुदा

की आज्ञा से किया । परन्तु यहां पर बिल्कुल ही उलटा मामला है, क्योंकि शादी पहिले हुई और आयतें बाद को उतरीं । ये सारी आयतें मुहम्मद साहब की इच्छा पूरी करने के अतिरिक्त और किसी काम की नहीं । खुदाने कहा और मुहम्मद साहब का निकाह बंधगया, इसका कोई प्रमाण शाह साहब ने नहीं दिया । यदि कोई मनुष्य निष्पक्ष होकर जिज्ञासु भाव से इन आयतों को पढ़ेगा, तो उसको अवश्य ही मानना पड़ेगा कि क़ुरान खुदा का वाक्य नहीं किन्तु मुहम्मद साहब का और कुछ उनकी प्रशंसा करने वालों की रचना है यहां पर इतने आक्षेप होते हैं—

१-खुदाने मुहम्मद साहब का, लोगोंके डरसे दिल में अपनी इच्छा अर्थात् ज़ैनब की शादी को छिपाना, प्रगट किया है : अब प्रश्न यह है कि जो मनुष्य पैग़म्बर का दावा करे और लोगों के भय से डरे, उसकी बात के सत्य होने का क्या प्रमाण है ?

२-दूसरा प्रश्न यह है कि जब मुहम्मद साहब की इच्छानुसार खुदाने ऐसा वाक्य भेजा था कि जिसके द्वारा ज़ैनब और उसका भाई,जो विवाहसे असन्तुष्ट थे, सन्तुष्ट होगये, उस समय क़ुरानी खुदाको ज्ञात था या नहीं की ज़ैनब का जी मेरे वाक्य से सन्तुष्ट न होगा ।

कहो कि ख़ुदा जानता था कि उससे ज़ैनब को तसल्ली नहीं होगी, और वह ज़ैदको, पैग़म्बर और ख़ुदा के समझाने पर तुच्छ समझी गई तो उसने क्यों हज़रत ज़ैनब से ज़ैद की शादी कराकर अपनी दया की भी निन्दा कराई? यदि ये आयतें पहिले आतीं और बाद को मुहम्मद साहब ज़ैनब को घर में रखते तबतो कहा जासकता था कि मुहम्मद साहब ने ख़ुदाका हुक्म पूरा करने के लिये यह कर्म किया, लेकिन मुहम्मद साहब ने ज़ैनब को पहिले घर में डाला, जैसाकि मुहम्मद साहब के जीवन चरित्र और इन आयतों से विदित होता है, इस जगह पर स्पष्ट कहना पड़ता है कि ये सब आयतें, मुहम्मदसाहब ने, उस बदनामी को जो उस घटना से सर्व साधारण कर रहे थे दूर करने के लिये, स्वयं बनाईं, यदि ख़ुदाकी यह इच्छा होती कि लेपालकों की स्त्रियों से विवाह न होतो कर लिया जाये तो वह तौरत में जिसको मुसलमानों के कथनानुसार ख़ुदा ने पहिले उतारा था, इस बात की आज्ञा देता कि लेपालक बेटे की स्त्री से विवाह करना बुरा"। इसके अतिरिक्त यदि मुहम्मद साहब उससे निकाह करते जो सारी बिरादरी में होता तो यह भी कहना कुछ उचित होता कि लेपालकों की स्त्रियों से विवाह कर लेने के

लिये ये आयतें उतरीं, परन्तु मुहम्मद साहब ने तो बिना निकाह ही घर में डाललिया, इससे निकाह किसी प्रकार भी धर्मानुकूल नहीं होसकता, क्योंकि शरियत के अनुसार जो विवाह होता है, प्रथमतो बहुतसे मनुष्यों के सामने परस्परको स्वीकारी होती है और क़ाज़ी निकाह पढ़ाता है। अब यहां न तो परस्पर की स्वीकारी का कोई प्रमाण मिलता है और न निकाह ही पढ़ागया। यदि कहो कि निकाह खुदा ने पढ़दिया, तो इसमें प्रमाण क्या? जिस समय हज़रत आयशा पर व्यभिचार का दोष लगा उस समय दोचार गवाह मांग लिये। वास्तव में व्यभिचार चोरी आदि ऐसे कर्म हैं जो छुपकरही किये जाते हैं, जिनके लिये चार साक्षियों की प्राप्ति बहुत ही दुस्तर है। परन्तु विवाह एक धार्मिक कर्म है जो सदैव जनसमूह के सामने होता है परन्तु दोनों समयों पर नितान्त नियम विरुद्ध कार्यवाही का होना अर्थात् व्यभिचार के लिये चार गवाहों को मांगना और निकाह को बिना गवाहों के ठीक समझना पक्षपातियों के अतिरिक्त और लोग कैसे उचित समझ सकते हैं?

यह क़ुरान मुहम्मद साहब का क़ानून है और उस की सारी ही बातोंसे वह स्वयं पृथक् हैं। यदि खुदा का नियम होता तो कोई भी मनुष्य पृथक् नहीं समझा

जासकता। यहतो मुसलमान लोगभी मानेंगे कि मुहम्मद साहब के पास इलहाम लाते हुए फरिश्तों को किसी ने नहीं देखा किन्तु इलहाम प्रायः रात्रि को आया करते थे और स्वप्न की अवस्था में आते थे। जबकि सारी ही क़ुरान की आज्ञाओं से मुहम्मद साहब पृथक हैं तो कौन बुद्धिमान मान सकता है, कि मुहम्मद साहब क्यों क़ुरान की आज्ञाओं से पृथक समझे गये! प्रमाण यह है कि प्रथम तो सारे ही मुसलमानों के लिये चार स्त्रियें विदित हुईं, परन्तु हज़रत इस आज्ञा से पृथक माने गये। दूसरे-सारे ही लोगों के विना निकाह के किसी स्त्री को घर में डाल लेना विदित नहीं, परन्तु मुहम्मद साहब ने शरई निकाह के विना ही ज़ैनब को डाल लिया तीसरे और लोगों की स्त्रियों को तलाक़ उपरान्त विवाह करलेना अधिकार है, परन्तु मुहम्मद साहब की स्त्रियों को यह अधिकार नहीं था, किन्तु मुहम्मद साहब की स्त्रियों से निकाह करना क़ुरान में विदित नहीं बतलाया। हमारे बहुत से मुसलमान भाई कह देंगे कि हज़रत की स्त्रियों से औरों को निकाह करना इसलिये उचित नहीं की वे सारे मुसलमानों की मा हैं, कारण यह कि मुहम्मद साहब रसूल हैं। और माके साथ किसी प्रकार भी निकाह उचित नहीं। परन्तु उनका यह उत्तर ठीक नहीं, क्यों-

कि यदि हम मुहम्मद साहब को पैग़म्बर होने के कारण सारे मुसलमानों और मुसलमानियों का पिता समझलें तो उनको स्त्रियों को मा मानना पड़ेगा।

ऐसी अवस्था में कुल मुसलमानियें कन्या का सम्बन्ध रक्खेंगी क्योंकि पैग़म्बर होने के कारण हज़रत उनके बाप हैं। ऐसी अवस्था में वे किसी से भी विवाह नहीं करसकते। परन्तु कैसा अन्याय है कि वे अपनी स्त्रियों को दूसरेकी स्त्री बनाने की लज्जा से बचने के लिये अपने को मुसलमानों का बाप समझें, परन्तु मुसलमानियें बाप न समझें, क्या मुसलमानियें हज़रत के संप्रदाय में नहीं हैं? यदि हैं तो जिस प्रकार मुसलमान हज़रत के बेटे हैं तो मुसलमानियें हज़रत की बेटियां हैं। यदि मा के साथ निकाह नाजायज़ है तो बेटी के साथ कहाँ जायज़ है परन्तु हज़रत तो क़ुरान की प्रत्येक आज्ञा से पृथक हैं उनके लिये कोई नियम नहीं? वह जो कुछ करलें उसके वास्ते आयतें तैयार मिलेंगी। शोक इस बात का है कि इतनी मोटी बात को भी मुसलमान लोग नहीं समझ पाते कि जब सारे मुसलमान हज़रत के बेटे हैं तो मुसलमानियां बेटियां क्यों नहीं हुई? फिर हज़रतका किसी से निकाह कराना किस प्रकार उचित है। इसके अतिरिक्त और भी प्रमाण

दिखते हैं कि कुरान में जो कुछ लिखा गया है। वह सब हज़रत को इच्छा के अनुकूल लिखा गया है। एक दिन हज़रत की स्त्रियों ने कहा कि खुदा जो कुछ आज्ञा देता है वह मनुष्यों को देता है स्त्रियों के लिये कोई आज्ञा नहीं। उसी समय हज़रत ने ये आयतें उतारीं अर्थात् रचीं देखो कुरान सिपारः २२ सूरतुल एहज़ाब।

या निसा अन्नबीये मैंयाते मिन् कुन्ना बें फ़ाहिशेतिम् मुबीनेतीं युज अफ़लहल् अज़ाबो देफ़ैन वकान ज़ालेक अल्लाहे यसीर'।

अर्थात्—हे बीबियो नबी की। जो कोई आवे तुम में से साथ बेहयाई ज़ाहिर के दोचन्द किया जावेगा। वास्ते उसके अज़ाब दो बराबर और हैं ये ऊपर अल्ला के आसान।

'वमैं यक़नुत मिन् कुन्ना लिल्लाहे व रसूले-ही वत अमल सालेहन् नोलेहा अज़रहा मर्तने व आतद्नलाहा रिज़क़न् करीम" ॥

अर्थात् और जो कोई फरमाबरदारी करे तुम में से वास्ते अल्लाः के और रसूल उसके और अमल करे अच्छे, देवेंगे हम उसको सवाब उसका दोबार और किया वास्ते उसके हमने रिज़्क़ अच्छा। पाठकगण! इसी प्रकार बहुत सी आयतें इस प्रकार की आगे लिखी

हैं जिनमें स्त्रियों को और विशेषकर नबी की स्त्रियों को उपदेश किया है । इन सारी आयतों के देखने से पता मिलता है कि जिस समय मुहम्मद साहब को कोई आवश्यकता हुई झट उन्होंने खुदा के नाम से आयत उतारली । बहुत से मुसलमान भाई हम से इसका प्रमाण माँगेंगे कि मुहम्मद साहब से स्त्रियों ने कब प्रश्न किया और मुहम्मद साहब ने ये आयतें उतारलीं । इस के उत्तर में हम कहेंगे कि देखो क़ुरान पृष्ठ ५२२ हाशिया छापाखाना नवलकिशोर । " हज़रत की एक स्त्री ने कहा था कि क़ुरान में सब ज़िक्र है मर्दों का, औरतों का कहीं नहीं उस पर यह आयत उतरी नेक औरतों की ख़ातिर को नहीं तो जो हुक्म मरदों को कहा सो औरतों पर ले आए हरबार, जुदा कहने की हाजत नहीं । इसके अतिरिक्त प्रायः लोग मुहम्मद साहब के घर आते और देर तक बात करते रहते जिससे हज़रत को बहुत कष्ट होता । और वह उनको घरसे बाहर निकालना चाहते परन्तु संकोच से और असन्तुष्ट हो जाने के भय से कुछ नहीं कहते थे कि ऐसा न हो कि संप्रदाय में मत भेद हो जावे लोगों को अधिक देर तक बैठने से रोकने के लिए, मुहम्मद साहब ने ये आयतें उतारीं अर्थात् गढ़ीं —देखो क़ुरान सिपारः २२ सूरतुल एहज़ाब—

या अइ यो हल्लज़ीन आमनू लातदखुलू बयूतन्नबीये इल्ला ऐं योज़न लकुम इलाता अमिन् वलाकिन् इज़ादो ईतुम् फ़दख़लू फ़इज़ये इम् तुम फ़न्तशेरू वलामुस्ता निसीना ले सर्दीस इन् ज़ाले कुम् कानलकुम् अन्तो ज़ूरम्नलल्लाहे वला अन्तन् केह्रदू अज़्वाजेहू भिम्बादेही अबद् इन्न जाले कुम् कान इन्दल्लाहे अज़ीम कान योज़िन् नवीयाफ़यस्त सहा मिन्कुम् वल्लाहो लायस्तह्यी मिनल् हक्क़ वइज़ा स अल् तो मूहुन्न मताअन् फ़सअलूहुन्न वराअ हिजाब जालेकुम् अतहरो ले कुम् वक़ुलूबे हिन्ना वका।

अर्थात्—अय लोगों जो ईमान लायेहो मत दाख़िल हो घरों में पैग़म्बरों के मगर यह अज़न् दिया जावे वास्ते तुम्हारे तर्क खाने के वइन्तज़ार करने वास्ते पकते उसके वे लेकिन जब बुलाये जाओ तुम, पास दाख़िल हो, पस जब खा चुका हो बस मुतफ़र्रिक हो जावे और मत बैठे रहो जी लगा रहने वास्ते २ बातों के। तहक़ीक़ यह काम है ईज़ा देना नबी को। बस शरमाता है तुमसे और अल्लाह नहीं शरमाता हक़ बात से। और जिस वक्त मांगा चाहो उससे कुछ असबाब, पस मांगलो उनसे पीछे परदे के से। यह बहुत पाक करने वाला है. वास्ते

दिलों तुम्हारे के और दिलों उनके के और नहीं लायक़ वास्ते तुम्हारे कि ईज़ा दो रसूल खुदा को और न यहकि निकाह करो बीवियों उसकी से पीछे उसके। कहदे तहक़ीक़ ये हैं नज़दीक अल्ला बड़ा गुनाह। प्रिय पाठक गण! उपरोक्त आयतों और मुहम्मदसाहिब के घरेलू झगड़ों के प्रकरण को देखने से आपको भले प्रकार विदित हो जावेगा कि क़ुरानशरीफ़ सारे का सारा ही मुहम्मद साहब की उपयोगी बातों का संग्रह है। उसमें जहां कहीं ख़ुदा की उपासना का थोड़ा बहुत प्रसंग आया है, वह इस बात के लिए कि लोग ये न कहैं कि मुहम्मदसाहब ने सब कुछ अपने वास्ते गढ़ा है। जहां खुदा का हुक्म मानना कहा है, वहीं उसके रसूल मुह-म्मदसाहब का हुक्म मानना कहा है यहतो प्रत्येक मनुष्य ज़ानता है कि क़ुरानशरीफ़ के अतिरिक्त मुसलमान लोग किसी दूसरी किताब को सत्य नहीं मानते, इसलिये खुदा के गौरव के स्थान में उसकी अत्यन्त निर्बलता प्रतीत होती है। मानो वह एक पुतला है जो मुहम्मद साहब के इशारों पर नाच रहा है। हम स्वयं आश्चर्य में हैं कि हमारे मुसलमान भाई नित्यप्रति पढ़ने पर भी इस बात पर कभी विचार नहीं करते कि जहां हज़रत की बीवी ने कहा खुदा ने झट आयत नाज़िल करदी। ज़हां

मुहम्मदसाहब लोगों के घर बैठे रहने से असन्तुष्ट हुए, झट आयतें उतरने लगीं। इसको इस बात पर अधिक वादविवाद करने की आवश्यकता नहीं है कि क़ुरानशरीफ़ मुहम्मदसाहब की उपयोगी आज्ञाओं का संग्रह है जिसमें अरब के पोलिटिकल क़ानून का संग्रह भी सम्मिलित है अथवा पुरानी घटनायें इसमें लिखी हैं। इसमें ईश्वरीय ज्ञान होने का कोई गुण नहीं है किन्तु एक इतिहास तो इसको कह सकते हैं हमारे इस लेख से कोई यह न समझे कि क़ुरानशरीफ़ में कोई बात भी अच्छी नहीं है किन्तु इसमें जितनी बातें अच्छी हैं वे नई नहीं हैं केवल पुरानी किताबों से ली हुई हैं। क़ुरान में क़िस्से कहानियों का भण्डार तो बहुत ही है। इसके अतिरिक्त क़ुरान में ऐसी बातें भी अधिकता से पाई जाती हैं कि जो सारी की सारी ही विद्या और बुद्धि के विरुद्ध हैं। सत्यासत्य के निर्णय के लिए विद्या और बुद्धि के अतिरिक्त और क्या होसकता है. अतः जो वाक्य विद्या और बुद्धि के विरुद्ध हो उसके असत्य होने में कोई सन्देह नहीं। और जिस वाक्य में झूँठ हो वह ईश्वरीय वाक्य कभी भी नहीं हो सकता। हमारे मुसलमान मित्र हम से प्रश्न करेंगे ? कि क़ुरान में कौन सी बात विद्या और बुद्धि के विरुद्ध है है. प्रथम तो यह कि क़ुरान में आसमान के विषय में जो

कुछ लिखा है वह विद्या और बुद्धि के कितना विरुद्ध है एक स्थल पर तो क़ुरान में आकाश को बुर्जों वाला लिखा है। देखो क़ुरान सिपारह ३० सूरतअल बुरूज-

"वस्समाएज़ातिल् बुरूजे"

अर्थात्-क़सम है आसमान बुर्जों वाले की। दूसरी जगह आकाश को छत के समान कहा है। यथा-देखो क़ुरान सिपारह १ सूरतुल बक़र—

"अल्लज़ी ज़ाअ़ललकुमुल् अ़र्दे फ़िराशऊँ वस्समाअ़ माअ़न् वअ़ंजल मिनस्समाए फ़अख़्रजूबे ही मिनस्समराते रिज़क़ल्ल कुम् फ़लाते तजअ़लू लिल्लाहे अन्दादन् व अन्तुम् ताल मून"

अर्थात्-जिनके किया वास्ते तुम्हारे ज़मीन को बिछौना और आसमान को छत और उतारा आसमान से पानी, पस निकला साथ उसके फूलों से रिज़क़ वास्ते तुम्हारे, बस, मुक़र्रिर करो अल्लाह के बराबर तुम जानते हो।

तीसरी जगह आसमान को जालीदार बतलाया है, और कहीं आसमान की खाल उतारना लिखा है। देखो सिपारः ३० सूरत।

"वइअस्समऊन् शक्क़त"

अर्थात्-और जिस वक्त आसमान की खाल उतारी

जावेगी। और कहीं पर आसमान का फटजाना लिखा है। देखो क़ुरान सिपारह ३० सूरतुल।

"वइज़स्समऊन् फ़ितरत्"

अर्थात् जिस वक्त आसमान फटजावें। और कहीं पर आसमान का खोलना है। देखो क़ुरान सिपारह २६ सूरतुल।

"फ़इजन्नजूमों तशतत्"

बस जिस वक्त कि तारे मिटाये जावेंगे। और "वइ-ज़स्समारा फ़ुरेजत" और जिस वक्त आसमान खोला जावे। पाठकगण! क़ुरान में आकाश के विषयमें भिन्न भिन्न प्रकार से बातें लिखी हैं, परन्तु आकाश क्या वस्तु है यह कहीं पर भी नहीं लिखा। जितने फ़िलासफ़र आजतक हुए हैं वे आकाश के होने से इन्कार करते हैं क्योंकि उसके अर्थ शून्य के हैं। अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या आकाश कोई सजीव शरीरधारी वस्तु है? जिसकी खाल उतारी जावेगी, खाल तो सजीवों के ऊपर हुआ करती है। यदि कहो आकाश कोई सजीव चेतन वस्तु है तो वह जालीदार और बहुत बुर्जों वाला कैसे हो सकता है? क्योंकि ये तो सब निर्जीव वस्तुओं में हो सकता है। यदि जीव रहित है तो उसकी खाल उतारने से क्या आशय? हमारे मुसलमान भाई कहेंगे

कि तुम मनुष्यों की विद्या का परमेश्वर की विद्या से मिलान करते हो इसका उत्तर यह है कि अभी तो यह बात साध्य कोटि में है कि .कुरान ईश्वरीय पुस्तक है वा नहीं । जब तक मुसलमान लोग .कुरान को विद्या और बुद्धि पूर्वक ईश्वरीय वाक्य सिद्ध न करदें तब तक उनके केवल कथनमात्रसे, कुरान ईश्वरीयवाक्य सिद्ध नहींहोगा अबतक जितने भी नियम ईश्वरीय ज्ञान के लिये नियत किये गए हैं, उनमें से कुरान में एक भी विद्यमान नहीं। हां कुरान में प्रतिज्ञायें तो बहुत की गई हैं परन्तु उनको सिद्ध करने के लिए कोई भी विद्या और बुद्धि पूर्व हेतु युक्ति नहीं दीगई । हां सौगन्धें (क़समें) तो बहुत खाई हैं जो उसके मनुष्यकृत होने का पूरा प्रमाण हैं। यदि कुरानी .खुदा सर्वशक्तिमान होता तो प्रत्येक मनुष्य के चित्त में कु.रान की विद्या का प्रवेश कर देता, परन्तु कु.रानी .खुदा तो मुसलमानों को लड़ाकर अपना शासन जमाना चाहता है, या इधर उधर से ऋण लेकर दिन काट रहा है। उसमें अपने वाक्य को विद्या और बुद्धि के अनुसार सच्चा सिद्ध करने की शक्ति नहीं। यही कारण है कि अपनी बात को सच्ची सिद्ध करने के लिए सौगन्धें खाता है या मुसलमानों को भड़काकर, तलवार के द्वारा उसको सच्चा ठहरवाता है, भला

ऐसे मनुष्य को जो अपने कथन को विद्या और बुद्धि से सिद्ध न करके, और न लोगों को कोई बुद्धि की बात बताये हां केवल क़समों से और तलवार से सच्चा सिद्ध करना चाहे, कोई बुद्धिमान् मनुष्य उसको ईश्वर कहने को तैयार नहीं होगा ईश्वर में वह शक्ति है कि बिना खाए वा कठोरता किए ही अपने वाक्य की सत्यता प्रत्येक में स्थिर कर सकता है। जैसे कि वेदोंके प्रकाशक परमात्मा ने अपना ज्ञान संसारी मनुष्यों की आत्माओं में प्रकाशित किया। अब जो लोग उसका खोज करते हैं वे उसकी विद्या के विषय की गम्भीरता को जान लेते हैं उसको ईश्वरीय ज्ञान मानने के लिए तैयार होजाते हैं। कारण इस का यह है कि वेदों की शिक्षा को प्रकाशित हुए एक अरब सत्तानवे करोड़ वर्ष बीत जाने पर भी, आज तक उसमें घटाने बढ़ाने की आवश्यकता नहीं हुई। परन्तु मनुष्य कृत पुस्तकें तौरेत, जबूर, इञ्जील और क़ुरान ३४ सौ सालमें इसलाम के कथनानुसार, तीन तो कलाम मंसूख होगए और क़ुरान की भी बहुत सी आयतें जैसे पूर्व तो १० काफ़िरों से एक मुसलमान का मुक़ाबला कराया, फिर उसको मंसूख करके दो के मुक़ाबले में एक को ला जमाया मंसूख होगई। मानों पहली आज्ञा तोड़ दी गई। अब इस अपूर्ण कथन को, जिसमें न तो ठीक ठीक जीवा:

स्माके गुण का पता मिलता है और न ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव ही भले प्रकार बताए गए हैं, और नहीं यह बताया कि मनुष्य किस प्रकार मुक्ति प्राप्त कर सकता है, और न सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने का कोई उपाय बतायागया है। ऐसी पुस्तक बिना सोचे समझे कैसे ईश्वरीय पुस्तक मान ली जावे ? क़ुरान की आज्ञाओं में एक दूसरे का खण्डन पाया जाताहै पहिले तो यह कहा कि जिधर चाहो उधर ही मुंह करके नमाज़ पढ़ो, फिर उसका खण्डन कर के यह कि काबे की ओर को पढ़ो अन्त में यह कहना पड़ता है कि जिस गुण का होना ईश्वरीय ज्ञान में आवश्यक है, वह क़ुरान के भीतर नहीं पाया जाता। हम आश्चर्य में हैं कि हमारे मुसलमान मित्र बिना सोचे विचारे क्यों इसको इलहामी किताब मान बैठे ?

परन्तु जब उस समय को याद किया जाता है जब इस क़ुरान का प्रचार अरब देश में हुआ तो चित्त को कुछ शान्ति होती है कि ऐसे लोगों में किसी किताबको इलहामी सिद्ध करदेना कौनसी बड़ी बात है। क्योंकि आज कल के चलते पुर्ज़े भी मूर्खों में अपनी प्रतिष्ठा जमाही लेते हैं। जिनको निश्चय नहीं वे मिरज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी को देखलें कि इस प्रकाश के समयभी

बहुतसी बातें झूँठी होने परभी, मुसलमानों के पैग़म्बर बनहो बैठे थे। जिस प्रकार मुहम्मद साहब की पैग़म्बरी के कारण उनके सहायक ऊमर और अली आदि हुए, उसी प्रकार मिरज़ा जी के भी सहायक मौलवी नूरुद्दीन आदि होगये जो मिरज़ाजी के मरण के उपरान्त गद्दी के अधिकारी बने। जब कि ऐसे प्रकाश के समय में भी मिरज़ा साहब इस्लामी पैग़म्बर बनगये तो उस अन्धेरे समय में और अरब जैसे मूर्ख देश में जहाँ उस समय विद्या के सूर्य के प्रकाश का चिन्ह तक न था, मुहम्मद साहब जैसे समयानुभवी और उच्च कुलोत्पन्न मनुष्य को जो अपने समय के सब से उत्तम ललित भाषी थे, पैग़म्बर होजाना कौनसी बड़ी बात है? जब मुसलमानों का एक बड़ा समूह लूटमार के कारण मुसलमान होगया, तो अन्य देश बलात् (जबरन) मुसलमान बनायेगये इसलाम तलवार का मज़हब है, उसमें विद्या और बुद्धि का कुछ भी काम नहीं बहुत लोग कहेंगे कि अरबी भाषा में तो बहुतसी विद्याएँ पायी जाती हैं, फिर अरब वालों को मूर्ख समझना कौनसी बुद्धिमानी है। परन्तु हमारे उन मित्रों को ध्यान रखना चाहिये कि इस समय जो अरब में पुस्तकें पाई जाती हैं वे मुहम्मद साहब के उप-रान्त दूसरी भाषाओं से अनुवाद होकर अरबी में सम्मि-

ज्ञित हुई हैं। मुहम्मद साहब से पूर्व अरब देश की बहुत ही बुरी अवस्था थी। लगभग सारे के सारे ही निवासी मूर्त्तिपूजक थे। और भी बहुत से मिथ्या विश्वास रखते थे, यहाँ तक कि मुहम्मद साहब के पिता ही स्वयं मूर्त्तिपूजक थे और मक्के के मन्दिर के पुजारी थे, और मक्का उस समय सारे देश की मूर्त्ति पूजा का अड्डा था अन्ध विश्वास तो इतना फैला हुआ था कि जिनका प्रमाण .क़ुरान के प्रत्येक पृष्ठ से मिलता है। जिन्न, भूत और फरिश्तों के विषय में जो .क़ुरान में लिखा है, उस से समझा जासकता है कि उस समय अरब देश की क्या अवस्था थी।

देखो .क़ुरान सिपारह २२ सूरते फातिर—

"अल हम्द लिल्लाहे फ़ातिरिस्समावाते वल अर्ज़े जाइलिल मलायकतेही रुसुलन उली अजनिह तिम् मस ना व सुलास व रुबाअ"।

अर्थात् सब तारीफ़ हैं वास्ते अल्लाह के मैं पैदा करने वाला आसमान और ज़मीनों का करने वाला फ़रिश्तों को पैग़ाम लाने वाला, बाज़ू वाले दो दो तीन तीन और चार चार। इस के हाशिये पर अबदुल क़ादर साहब फ़रमाते हैं कि जिबराईल के छः सौ पर हैं। मानों .क़ुरानी फरिश्ते परन्द हैं। मनुष्य नहीं। परन्तु आश्चर्य

इस बात का है कि छः सौ पर वाला जिबराईल फ़रिश्ता मुसलमानों के सामने मुहम्मद साहब के पास वही लाता रहा. परन्तु किसी मुसलमानने उसको न देखा, मानो सारे के सारे ही मुसलमान ऐसी मोटी वस्तु को नहीं देख सके, तो आवागमन और जीव प्रकृति के अनादित्व जैसे सूक्ष्म विषय को कैसे जान सकते हैं, फरिश्तों के पक्षी होने का खण्डन इस बात से होता है कि जंग उहुद में जो .क़ुरानी खुदा ने मुहम्मद साहब को फ़रिश्तों की फ़ौज सहायता के लिये भेजी थी, उसमें फ़रिश्ते घोड़ों पर सवार थे। परिन्दों को सवारी की कोई आवश्यकता नहीं होती, इसलिये या तो फरिश्तों के पर होना असत्य ठहरते हैं, या उनका घोड़ों की सवारी पर आना सिद्ध नहीं होता। सब से अधिक शोक की बात यह है कि .क़ुरानी .खुदाने क़ुरान के इलहामी होने में कोई ऐसी युक्ति नहीं दी कि जिस से .क़ुरान का इलहामी होना सिद्ध हो। प्रायः यह कहा है कि यदि तुम सच्चे हो तो ऐसी सरत बना लाओ। अब विचार करने से यह विदित नहीं होता कि क़ुरानी खुदा का किस सूरत से प्राशय है? कौनसी सूरत के अनुसार फ़साहत चाहता है? या उसके विद्या सम्बन्धी विषय की तुलना चाहता है। क्योंकि क़ुरान में केवल ऐसा लिखा है- देखो क़ुरान सिपारः २ सूरत बक़र—

"वइन् कुन्तुम्फ़ी रैबीम्मिम नज्जल्न अला अब्दिन फ़ातू बिसूरतिम्मिस्ले ही वदऊ शुहदाअकुम् मिन्दू निल्लाहे इन् कुन्तुम् स्वादिक़ीन्" ।

अर्थात् और अगरहो तुम बीच शकके उस चीज से कि उतारा हमने ऊपर बन्दे के अपने, पस ले आओ एक सूरत मानिन्द उसकी के और पुकारो शाहिदों अपनों को वास्ते अल्लाह के अगरहो तुम सच्चे । इस आयत से इस बात का कुछ पता नहीं मिलता कि क़ुरानी ख़ुदा किस सूरत की तुलना की आयत वा सूरत बनवाना चाहता है । और किस गुण की तुलना कराना चाहता है । यदि इस बात को खोल दिया होता तो आज तक सैकड़ों किताबें क़ुरान से अच्छी दिखलाई जातीं परन्तु यह वाक्य इस प्रकार का है जिससे कोई परिणाम नहीं निकलता कि यदि मुसलमान कहें कि क़ुरान के समान फ़साहत (लालित्य) किसी किताब में नहीं है तो कालिदास और शैक्सपियर के नाटक और नाविल, और वारिसशाह का हीरा रांझा पढ़ना चाहिये । तुलसीदास जी की रामायण जितनी फ़सीह है उसके समान तो क़ुरान में फ़साहत नहीं दीखती । परन्तु कठिनता तो यह है कि हमारे मुसलमान मित्र संस्कृत विद्या से अनभिज्ञ हैं, नहीं तो क़ुरान

से अधिक फ़सीह पुस्तकें संस्कृत में उनको दीख पड़तीं। यदि कहें कि अरबी भाषा में नहीं तो फ़ैज़ी का बेनुक़त क़ुरान देखें, परन्तु केवल अरबी भाषाकी फ़साहत इलहामी होने का हेतु नहीं। विदित होता है कि अरबी भाषा के क़ुरान की फसाहत का दावा केवल अरब वालों के लिये ही किया गया है नहीं तो संसारमें इससे अधिक फ़सीह पुस्तकें विद्यमान हैं। अगर क़ुरान खुदा का बनाया हुआ होता तो अरब वालों के ही लिये नहीं कहता कि ऐसी सूरत बना लाओ, किन्तु दूसरे देश वासियों से भी तुलना करने के लिये कहता। यदि यह कहा जावे कि "मज़मून की ख़ूबी" के विषय में परीक्षा करने के लिय "दावा" किया गया है तो बहुत से लोग यह कहते हैं कि यह दावा केवल सूरते फ़ातिहाके लिये है, क्योंकि ऐसा मज़मून दुनियां की किसी किताब में नहीं है।

परन्तु उनका यह कहना ठीक नहीं क्योंकि प्रथम तो जो कुछ कथन है क़ुरान के कर्त्ता का नहीं किन्तु यह सारा का सारा प्रकरण यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के मन्त्रों का आशय रूप है जो ईशोपनिषद्द के नाम से प्रसिद्ध है, जिसका उर्दू अनुवाद भी छप चुका है यदि आप लोग पढ़ें तो पता लग जायगा कि क़ुरान ईश्वर

के विषय में कुछ भी नहीं जानता, यदि वेदों में यह विषय न होता तो .क़ुरान इतने से भी कोरा रहता।

वेद, .क़ुरान, इञ्जील, ज़बुर और तौरेत से सिद्ध हो चुका है, इसलिये वह मज़मून जो पहिले से ही वेद में विद्यमान हो, .क़ुरानके कर्त्ता का नहीं हो सकता, अतः वह इलहामी भी नहीं हो सकता।

.क़ुरान मे कोई ऐसा विषय नहीं जो .क़ुरान से पूर्व विद्यमान नहीं इसको छोड़ कर कि "मुहम्मद साहब खुदाके रसूल हैं और इसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिये"। और स्त्रियोंकी कलह और झँझट को छोड़ कर सब कुछ क़िस्से कहानी तौरेत, .ज़ुबूर और इंजीलमें विद्यमान हैं वहीं से सबके सब लिये गयेहैं, परन्तु तौरेत .ज़ुबूर और .क़ुरान के क़िस्सोंमें परस्पर बहुत विरोध हैं। हम बड़े आश्चर्य में हैं कि खुदा ने जो कुछ तौरेत में कहा है वह सत्य है वा .क़ुरान का कहा सत्य है हमारे मुसलमान मित्र कहेंगे कि जब वे सारी किताबें .क़ुरान के आने से मंसूख़ होगईं तो उनकी तुलना .क़ुरान से किस प्रकार हो सकती है?

.क़ुरान प्रचलित नियम है, और तौरेत आदि मन्सूख़ हुए नियम हैं।

परन्तु प्रश्न तो यहहै कि क़ानून मंसूख़ हो सकतेहैं वा ऐतिहासिक घटनायें भी मंसूख होजाया करतीहैं इसबातको सब मानतेह प्रत्येक मनुष्य अपनी आज्ञाको बदल सकताहै परन्तु किसी घटना के विषय में जिसमें उसने साक्षी दी हो, इन्कार नहीं कर सकता जब तक वह यह सिद्ध न करदे कि साक्षी देते समय पागल था। इससे यह सिद्ध होता है कि या तो वह झूठा है उसने पहले सत्य लिखवाया था, परन्तु अब उसने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये दूसरा झूंठा बयान लिखवाया है।

परन्तु नये बयान से पिछला बयान झूंठा सिद्ध नहीं हो सकता। यदि हमारे मुसलमान मित्र नेक भी न्याय पर कटिबद्ध हो जावैं तो दुनियां से वह अन्धकार, जो असत्य विचारों से फैल रहा है सारे का साराही दूर होजावे। यद्यपि अरब देश की अस्त व्यस्त और अस्थायी जातियों को इसलाम से कुछ लाभ पहुंचा हो, परन्तु और देशों के लिये तो अत्यन्त ही हानि कारक हुआ है। और कुछ नहीं तो झगड़ा तो होता ही रहेगा। परन्तु मुसलमानों को यह तो विचारना चाहिये कि क़ुरान ख़ुदाको एकदेशी बताता है, और एकदेशी ईश्वर हो नहीं सकता। क़ुरान छः दिन में सृष्टि की उत्पत्ति बतलाता है और सातवें दिन ख़ुदा

को अर्श पर बिठाता है। कहीं पर 'कुन' कहनेसे दुनियां की उत्पत्ति बताता है। चाहे सर्व साधारण इसको एक तुच्छ बात समझें विद्वान लोग इसको विद्या के विरुद्ध समझते हैं, और .खुदा को भी सातवें दिन विश्रामकी आवश्यकता होने से विकारी सिद्ध कर दिया।

इसके अतिरिक्त .कुरान ने यह नहीं दिखलाया कि उन छः दिनों में प्रथम दिन क्या बनाया यदि कहो ये बातें तौरेत में आचुकी हैं। यह हिस्सा वहींसे लेलेना चाहिये। तो तौरेतमें अर्श पर चढ़ने की चर्चा नहीं है, और कुरान में है। ये बात कोई खुदाकी आज्ञा नहीं जो कि मनसूख़ होगई हो किन्तु यह तो एक घटना का वर्णन है इसमें विरोध होना दोनों में से एक को झूठा सिद्ध करना है। दूसरे इञ्जील वालों का सबूत (विश्राम का दिन) रविवार है, परन्तु कु.रान के मानने वाले विश्रामकादिन शुक्र (जुमा) ठहराते हैं। अब प्रश्न यह है कि दोनों में से ठीक २ विश्राम का दिन कौनसा है? अन्ततः प्रत्येक घटनाये, जो कु.रान ने पुरानी किताबों से ली हैं, कुछ न.कुछ अन्तर अवश्य है, जिससे सिद्ध होता है कि कु.रान के कर्त्ता ने जो पुराने क़िस्से सुने थे वे सब लिख दिये और अपनी योग्यता जतलाने को कुछ बातों में भेद भी करदिया

परन्तु यह न सोचा कि दो विरुद्ध बातें सत्य नहीं हो सकतीं, प्रत्युत उस समय सत्य होसकती हैं कि जब उस के साथी एकसा ही वर्णन करें।

जहांतक खोज की गई वहांतक यही सिद्ध हुआ कि नतो कुरान की आवश्यकता ही प्रतीत हुई, और न उसमें इलहामी होने के गुण ही पाए जाते हैं। केवल मुसलमान भाइयों ने पहिले तो तलवार और लालच से स्वीकार किया है। क्योंकि मुहम्मद साहब के जीवन से और उस लूट मारकी बांट के झगड़ों के देखने से, जो मुहम्मद साहब के समय में हुए इस बात का पूरा पता मिलता है कि उस समय जितने लोग लूट मार के वास्ते मुसलमान हुए उस का दशवां भाग भी तो धर्म के तत्व को जान कर नहीं हुए।

अब बहुत काल तक मुसलमानी मत में रहने से हमारे मुसलमान भाइयों को ऐसा पक्षपात ने जकड़ लिया है कि कुरान और पैग़म्बरों की सिद्धि के लिए खुदा तक पर दोषारोपण करने को तैयार हैं। यहां तक कि कुरान में जो कुरान के कर्त्ता ने हज़ारों क़समें खाई हैं और कुरान की सच्चाई को सिद्ध करने का यत्न किया है उन क़समों के खाने काभी दोष परमेश्वर के पवित्र नाम पर लगादिया। और यह नहीं सोचा कि जिस खुदाने

सूर्य की उत्पत्ति और उसके प्रकाश का ज्ञान विना किसी क़सम खाए करदिया, जिसने मृत्यु का भय प्रत्येक प्राणी के चित्त में उत्पन्न करके उनके अभिमान को तोड़ दिया, जिसकी शक्ति के आधीन रहकर प्रत्येक परमाणु अपना २ कार्य कर रहा है, ऐसे सर्व शक्तिमान् को अपने कथन की सत्यता के लिए क़समें खाने की आवश्यकता होती, अपने कथन की सत्यताको संसारी मनुष्यों में न जमासकता । उसको मुसलमानों को लड़ाकर अपना काम चलाना पड़ा । सर्व स्वामी को ऋण लेनेकी आवश्यकता बतलाने वाला क्या बुद्धिमान होसकता है ? खुदा पर "मक्र" का दोष लगाना । यहां तक कि वह कौन से दोष हैं जो कुरान ने खुदापर न लगाए इसलिए मुसलमान मित्रों ! यदि सचमुच एक खुदा की उपासना का विचार रखते हो, यह मुख्य उद्देश्य है कि वे मनुष्य पूरा और मनुष्यघात के भंडार से हाथ उठाकर, और बुद्धि से जो मनुष्य के सुधार के लिए दी है सत्यधर्म को ग्रहण करें ।

सद्धर्म का सम्बन्ध, केवल मनुष्यों की आत्मा हृदय और ईश्वर से है उसमें किसी दूसरे मनुष्य की सहायता की आवश्यकता नहीं । न उसमें किसी सांसारिक वस्तु की आवश्यकता है हज्ज आदि की जितनी बात हैं वे

सब मनुष्यों के बनाए ढकोसले हैं ईश्वर सब जगह और सब ओर विद्यमान हैं जहां सच्चे जीसे उसकी उपासना होगी वहीं कृत कृत्यता होगी। झूठे दिलसे पैग़म्बरों को मानकर काबे की ओर बैठकर नमाज़ पढ़ने से कोई लाभ न होगा यदि ईश्वर की सृष्टि के साथ सद्‌ व्यवहार किया जावे और उस के दिल को हाथ में लिया जावे तो उस से जितना पुण्य होता है वह जहाद के करने से, जिससे संसार नष्ट होता है, लाख जगह अच्छा है। जबकि खुदाने ही उन के दिल पर मुहर करदी हो तो आप के कह देने से और जहाद के करने से वे किस प्रकार धर्मात्मा बनसकते हैं। कुरान के अनुसार मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र नहीं है और जो कर्म करने में स्वतन्त्र नहीं। वह किस प्रकार पुण्य और पाप का भागी हो सकता है। देखो क़ुरान सिपारह १ सूरतुल बक़र।

"इन्नल्लजीन कफ़रूसवाऊन् अलैहिम् अअन्ज़र तहुम् अम् लम् तुम् ज़िर हुमूल योमिनून"

अर्थात्—तहक़ीक़ जो लोग कि काफ़िर हुए बराबर है ऊपर उनके क्या डराया तूने उनको और क्या न डराया तूने उनको, नहीं ईमान लावेंगे।

"ख़तम ल्लाहो कुलूबे हिम् वअला समे-अहिम् व अला अब्सारेहिम् गिशावः व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम।"

अर्थात् मुहर की अल्लाह ने ऊपर दिलों उनके के और ऊपर कानों उनके और ऊपर आखों उनके के परदह है, और वास्ते उनके अज़ाब है बड़ा हे मुसल-मानों! नेक विचारो कि जिनको .ख़ुदाने काफ़िर बनाया और उनके दिलपर .ख़ुदाने मुहर करदी अब वह किस प्रकार कुफ़्र को छोड़ सकता है ? क्योंकि उनका तो अपने दिलपर कोई अधिकार ही नहीं जैसा .ख़ुदा ने बना दिया है वैसे बन गये। यदि वे स्वतन्त्र होकर कुफ़्र करते तो किसी प्रकार दोषी भी हो सकते थे, परन्तु .ख़ुदा ने उनको काफ़िर बनाया स्वयं ही मुहर भी लगा दी, स्वयं ही उनके मारने की आज्ञा मुसलमानों को दे दी। क्या कोई न्यायप्रिय इसको .ख़ुदा का कलाम मान सकता है ? कभी नहीं। ईश्वर ऐसा अ-न्यायी नहीं कि स्वयं ही मनुष्य को कुकर्म करने के लिये मनुष्य के हृदय को बुरा बनादे और स्वयं ही दण्ड दे। आज कल जितने मनुष्य धर्म भ्रष्ट हैं, .क़ुरान की इस आयत के अनुसार तो उन्हें .ख़ुदा ने बनाया है। देखो .क़ुरानी ख़ुदा लोगों से ठट्ठा भी करता है! देखो .क़ुरान सिपारः १ सूरतुल बक़र—

अल्लाः ईसमान् लअसम व मदाहुम मन अलनिसारहुम यई सऊन

अर्थात्—अल्लाः ठट्ठा करता है उनको और खैंचता है उनको बीच सरकशी उनकी के। प्रिय मित्रगण! क़ुरान के उपरोक्त लेख से आपको विदित होगया होगा कि क़ुरान ऐसे मनुष्य का कथन है कि जो ठट्ठा करता है मक्र करता है, ऋण मांगता है, क़समें खाता है, प्रतिज्ञा करता है, मुसलमानों को लड़ाकर लाभ उठाता है और पशु पक्षी आदि और मनुष्यों को मार डालने की आज्ञा देता है। ऐसे को हमारे मुसलमान भाई खुदा समझें तो उनकी इच्छा है मृत्यु सर पर सवार है, संसार की सारी वस्तु अनित्य हैं केवल धर्म ही काम आने वाला है यदि हम अपनी अज्ञानतासे इस धर्म पथसे भटक गये तो हमसे अधिक अभागा कौन होगा? उठो प्यारे मुसलमान भाइयो! सोचो, विचारो विद्या और बुद्धि से सत्यताकी खोज करो। परमात्मा के नित्य नियम की जांच करो, उनके अनुकूल चलने के लिये संसारी रुकावटों का भय मत करो। सत्यता परमात्मा को प्यारी है। दयालु उसका नाम है। पस और सत्यता मनुष्य की उन्नति का कारण है। धर्म से मनुष्यों को यदि हानि पहुंचे तो वह धर्म मनुष्य का बनाया हुआ है।

ईश्वर की आज्ञा वही है जिसमें सारे प्राणियों पर दया हो । दूसरों को दुःख देकर स्वयं अपना पालन करना मनुष्यता से गिराने वाला कर्म है । ईश्वर सर्व व्यापक और सर्वान्तर्यामी है, उसकी सभा में न साक्षियों की आवश्यकता है न बहीखाते की, किन्तु सारा भेद स्वयं ही जानता है । इसलिये उसके कामों में किसी मनुष्य को या फरिश्ते को सम्मिलित करना उचित नहीं है वह अपनी शक्ति और स्वभाव से न्यायकर्त्ता और दयालु है । उसके कार्य्य में हस्ताक्षेप करना पाप है । न वह क्रूर है, न वह क्रोधी है; किन्तु न्यायमूर्त्ति है । उसके आश्रय से मनुष्य अपने अभीष्ट को सिद्ध कर सकता है । किसी संसारी मनुष्य को उद्धारक बनना ईश्वर के न्याय का नाश करना है जो असम्भव है ।